15, 16, 17-03-2024

एनएसआई स्टाफने हिंदी में कामकाज का लिया संकल्प

स्वतंत्र भारत सं. कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में संस्थान में कार्यरत लगभग 40 से अधिक तकनीकी अधिकारियों को सरकारी काम-काज में हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सोमवार को कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एडब्लूईआईएल मुख्यालय, रक्षा मंत्रालय, कालपी रोड, से विद्वान अतिथि हरीश कुमार गुप्ता थे।

मां वीणापाणि को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के उपरांत निदेशक, प्रो.डी.स्वाईन द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रो. स्वाईन ने कहा कि समय की मांग है कि हमको हिंदी भाषा को उसका गरिमामय स्थान प्रदान करना चाहिये। संविधान निर्माण के समय कार्यालय में काम काज में आसानी के लिये कुछ समय तक हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग का प्रावधान किया गया था, लेकिन आजादी के बाद काफी लंबा समय बीत जाने पर भी स्थितियां बदली नहीं हैं। हर कार्यालय में अंग्रेजी के प्रति लगाव देखा जा सकता है। अंग्रेजी का ज्ञान बुरा नहीं है, लेकिन उसका प्रयोग जहां उचित हो वहीं किया जाना चाहिये। हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों में तो विशेष रूप से हिंदी में ही कामकाज को प्रोत्साहन दिया जाना उचित होगा, तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगें। हरीश कुमार गुप्ता ने संविधान की विभिन्न धाराओं-उपधाराओं का उल्लेख करते हुये इसके प्रयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। श्री गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम अपने बच्चों को अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी मास्टर बनायें। हिंदी अब बेचारी नहीं रही है। इसका वैश्विक विस्तार अब बढ़ रहा है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली अंग्रेजी उसके बाद मंदारिन और फिर अपनी हिंदी का स्थान है। श्री गुप्ता ने कहा कि खेद है कि इस गणना में हिंदी की सहयोगी विविध बोलियों को नहीं शामिल किया गया है, जबकि मंदारिन के साथ ऐसा नहीं है। यदि इस सर्वेक्षण में मंदारिन के समान गणना की जाये तो विश्व के समस्त भू-भाग में फैले हिंदुस्तानियों का मान बढ़ाते हुये हम दूसरे स्थान पर होंगें। जैसे स्त्री के माथे की बिंदी उसके सौंदर्य में कई गुना अभिवृद्धि कर देती है, उसी प्रकार हिंदी के माथे की बिंदी भी इसका विश्व में मान बढ़ा रही है। हर्ष का विषय है कि विदेशों में भी हिंदी को पढ़ाया और बढ़ाया जा रहा है।

कार्यशाला में शामिल प्रतिभागियों में से डॉ. सुधांशु मोहन, कनि.वैज्ञानिक अधिकारी, श्री विनय कुमार, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, श्री मिहिर मंडल, सहायक आचार्य शर्करा शिल्प आदि ने अपनी कई शंकाओं को विद्वान अतिथि के समक्ष रखा, जिनका निराकरण उन्होंने विस्तार से किया। कार्यक्रम में श्री बृजेश कुमार साहू, वरि.प्रशा.अधिकारी, श्री शैलेन्द्र कु. त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा शिल्प, श्री अनूप कु.कनौजिया, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, डॉ.अशोक कु.यादव, सहायक आचार्य कृषि रसायन, डॉ.अनंत लक्ष्मी रंगनाथन, सहायक आचार्य जैव रसायन आदि शामिल रहे।

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान मे एक कार्यशाला का आयोजन

कानपुर (डीएनएन)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में संस्थान में कार्यरत लगभग 40 से अधिक तकनीकी अधिकारियों को सरकारी काम.काज में हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में। मुख्यालय, रक्षा मंत्रालय, कालपी रोड, कानपुर से पधारे आमंत्रित विद्वान अतिथि श्री हरीश कुमार गुप्ता थे। मां वीणापाणि को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के उपरांत निदेशक, प्रो डी स्वाईन द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रो० स्वाईन ने कहा कि समय की मांग है कि हमको हिंदी भाषा को उसका गरिमामय स्थान प्रदान करना चाहिये। संविधान निर्माण के समय कार्यालय में काम काज में आसानी के लिये कुछ समय तक हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग का प्रावधान किया गया था लेकिन आज आजादी के बाद काफी लंबा समय बीत जाने पर भी स्थितियां बदली नहीं हैं। हर कार्यालय में अंग्रेजी के प्रति लगाव देखा जा

सकता है। अंग्रेजी का ज्ञान बुरा नहीं है। लेकिन उसका प्रयोग जहां उचित हो वहीं किया जाना चाहिये। हिंदी भाषा.भाषी क्षेत्रों में तो विशेष रूप से हिंदी में ही कामकाज को प्रोत्साहन दिया जाना उचित होगा, तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगें। श्री हरीश कुमार गुप्ता ने संविधान की विभिन्न धाराओं.उपधाराओं का उल्लेख करते हुये इसके प्रयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। श्री गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम अपने बच्चों को अंग्रेजी के साथ.साथ हिंदी का भी मास्टर बनायें। हिंदी अब बेचारी नहीं रही है। इसका वैश्विक विस्तार अब बढ़ रहा है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली अंग्रेजी उसके बाद मंदारिन और फिर अपनी हिंदी का स्थान है। श्री गुप्ता ने कहा कि खेद है कि इस गणना में हिंदी की सहयोगी विविध बोलियों को नहीं शामिल किया गया है, जबकि मंदारिन के साथ ऐसा नहीं है। यदि इस सर्वेक्षण में मंदारिन के समान गणना की जाये तो विश्व के समस्त भू.भाग में फैले हिंदुस्तानियों का मान बढ़ाते हुये हम दूसरे स्थान पर होंगें। जैसे स्त्री के माथे की बिंदी उसके सौंदर्य में कई गुना अभिवृद्धि कर देती है उसी प्रकार हिंदी के माथे की बिंदी भी इसका विश्व में मान बढ़ा रही है। हर्ष का विषय है कि विदेशों में भी हिंदी को पढ़ाया और बढ़ाया जा रहा है। कार्यशाला में शामिल प्रतिभागियों में से डा सुधांशु मोहन कनिष्ठवैज्ञानिक अधिकारी, विनय कुमार, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, मिहिर मंडल, सहायक आचार्य शर्करा शिल्प आदि ने अपनी कई शंकाओं को विद्वान अतिथि के समक्ष रखा, जिनका निराकरण उन्होंने विस्तार से किया। कार्यक्रम में बृजेश कुमार साहू, वरिष्ठप्रशा अधिकारी, शैलेन्द्र कु त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा शिल्प, अनूप कनौजिया, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, डॉ अशोक कु यादव, सहायक आचार्य कृषि रसायन डॉ0अनंत लक्ष्मी रंगनाथन, सहायक आचार्य जैव रसायन आदि शामिल रहे। कार्यक्रम के समापन के अवसर पर मल्लिका द्विवेदी, सहायक निदेशक राजभाषा ने भारतेंदु हरिश्चंद्र की पंक्तियां दृ निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल के साथ कार्यशाला में शामिल प्रतिभागियों एवं विद्वान वक्ता का आभार व्यक्त करते हुये धन्यवाद ज्ञापित किया।

लखनऊ 19-03-2024

http://www.dailynewsactivist.com

शब्द शब्द संघर्ष

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

सत्य का असर
समाचार पत्र

19,03,2024 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

कानपुर **वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल**

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में कार्यरत तकनीकी अधिकारियों को सरकारी काम काज में हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यशाला का किया गया आयोजन

मां वीणापाणि को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन करते राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक, प्रो.डी.स्वाईन

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में कार्यरत लगभग 40 से अधिक तकनीकी अधिकारियों को सरकारी काम-काज में हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दिनांक-15.3.2024 को अपराह्न 3.30 से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में AWEIL मुख्यालय, रक्षा मंत्रालय, कालपी रोड, कानपुर से पधारे आमंत्रित विद्वान अतिथि श्री हरीश कुमार गुप्ता थे।मां वीणापाणि को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के उपरांत निदेशक, प्रो.डी.स्वाईन द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रो. स्वाईन ने कहा कि समय की मांग है कि हमको हिंदी भाषा को उसका गरिमामय स्थान प्रदान करना चाहिये। संविधान निर्माण के समय कार्यालय में काम काज में आसानी के लिये कुछ समय तक हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग का प्रावधान किया गया था, लेकिन आज आजादी के बाद काफी लंबा समय बीत जाने पर भी स्थितियां बदली नहीं हैं। हर कार्यालय में अंग्रेजी के प्रति लगाव देखा जा सकता है। अंग्रेजी का ज्ञान बुरा नहीं है, लेकिन उसका प्रयोग जहां उचित हो वहीं किया जाना चाहिये। हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों में तो विशेष रूप से हिंदी में ही काम—ा ज को प्रोत्साहन दिया जाना उचित होगा, तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।श्री हरीश कुमार गुप्ता ने संविधान की विभिन्न धाराओं-उपधाराओं का उल्लेख करते हुये इसके प्रयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। श्री गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम अपने बच्चों को अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी मास्टर बनायें। हिंदी अब बेचारी नहीं रही है। इसका वैश्विक विस्तार अब बढ़ रहा है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली अंग्रेजी उसके बाद मंदारिन और फिर अपनी हिंदी का स्थान है। श्री गुप्ता ने कहा कि खेद है कि इस गणना में हिंदी की सहयोगी विविध बोलियों को नहीं शामिल किया गया है, जबकि मंदारिन के साथ ऐसा नहीं है। यदि इस सर्वेक्षण में मंदारिन के समान गणना की जाये तो विश्व के समस्त भू-भाग में फैले हिंदुस्तानियों का मान बढ़ाते हुये हम दूसरे स्थान पर होंगे। जैसे स्त्री के माथे की बिंदी उसके सौंदर्य में कई गुना अभिवृद्धि कर देती है, उसी प्रकार हिंदी के माथे की बिंदी भी इसका विश्व में मान बढ़ा रही है। हर्ष का विषय है कि विदेशों में भी हिंदी को पढ़ाया और बढ़ाया जा रहा है।कार्यशाला में शामिल प्रतिभागियों में से डॉ. सुधांशु मोहन, कनि.वैज्ञानिक अधिकारी, श्री विनय कुमार, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, श्री मिहिर मंडल, सहायक आचार्य शर्करा शिल्प आदि ने अपनी कई शंकाओं को विद्वान अतिथि के समक्ष रखा, जिनका निराकरण उन्होंने विस्तार से किया। कार्यक्रम में श्री बृजेश कुमार साहू, वरि.प्रशा.अधिकारी, श्री शैलेन्द्र कु. त्रिवेदी, सहायक आचार्य शर्करा शिल्प, श्री अनूप कु.कनौजिया, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, डॉ.अशोक कु.यादव, सहायक आचार्य कृषि रसायन, डॉ.अनंत लक्ष्मी रंगनाथन, सहायक आचार्य जैव रसायन आदि शामिल रहे।कार्यक्रम के समापन के अवसर पर श्रीमती मल्लिका द्विवेदी, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने भारतेंदु हरिश्चंद्र जी की पंक्तियां – निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल के साथ कार्यशाला में शामिल प्रतिभागियों एवं विद्वान वक्ता का आभार व्यक्त करते हुये धन्यवाद ज्ञापित किया। (अखिलेश कुमार पाण्डेय)मुख्य अभिकल्पक

सरकारी कामकाज में हिन्दी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला

हरिश कुमार को प्रतीक चिन्ह देते निदेशक प्रो. डी. स्वाईन।

कानपुर, 18 मार्च। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में संस्थान में कार्यरत लगभग 40 से अधिक तकनीकी अधिकारियों को सरकारी काम-काज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यालय रक्षा मंत्रालय से आये हरीश कुमार गुप्ता व संस्थान के निदेशक प्रो. डी. स्वाईन ने मां वीणापाणि को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से किया। प्रो स्वाईन ने कहा कि समय की मांग है कि हमको हिंदी भाषा को उसका गरिमामय स्थान प्रदान करना चाहिये। संविधान निर्माण के समय कार्यालय में काम काज में आसानी के लिये कुछ समय तक हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग का प्रावधान किया गया था, लेकिन आज आजादी के बाद काफी लंबा समय बीत जाने पर भी स्थितियां बदली नहीं हैं। हर कार्यालय में अंग्रेजी के प्रति लगाव देखा जा सकता है। अंग्रेजी का ज्ञान बुरा नहीं है, लेकिन उसका प्रयोग जहां उचित हो वहीं किया जाना चाहिये। हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों में तो विशेष रूप से हिंदी में ही कामकाज को प्रोत्साहन दिया जाना उचित होगा। तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। मुख्य वक्ता हरीश कुमार गुप्ता ने संविधान की विभिन्न धाराओं-उपधाराओं का उल्लेख करते हुये इसके प्रयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। श्री गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम अपने बच्चों को अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी मास्टर बनायें। हिंदी अब बेचारी नहीं रही है। इसका वैश्विक विस्तार अब बढ़ रहा है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली अंग्रेजी उसके बाद मंदारिन और फिर अपनी हिंदी का स्थान है। डॉ सुधांशु मोहन, वैज्ञानिक अधिकारी विनय कुमार, मिहिर मंडल आदि ने अपनी कई शंकाओं को विद्वान अतिथि के समक्ष रखा। इस दौरान बृजेश कुमार साहू, शैलेन्द्र कुमार त्रिवेदी, अनूप कुमार कनौजिया, डॉ अशोक कुमार श्रीमती मल्लिका द्विवेदी आदि मौजूद रही।

हिंदी को देनी चाहिए प्राथमिकता

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सोमवार को कार्यशाला के दौरान तकनीक कर्मचारियों को हिंदी भाषा का महत्व बताया गया। इस दौरान उन्हें सरकारी कार्य के समय भी हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करने की सीख दी गई। कार्यशाला में संस्थान में कार्यरत 40 तकनीकी अधिकारियों को मुख्य अतिथि के रूप में एडब्ल्ईआईएल के अधिकारी हरीश कुमार गुप्ता ने संबोधित किया। कार्यशाला में कनिं. वैज्ञानिक अधिकारी डॉ. सुधांशु मोहन, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी विनय कुमार, सहायक आचार्य शर्करा शिल्प मिहिर मंडल आदि मौजूद रहे।

Digital News

- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में हिंदी विषय पर कार्यशाला का आयोजन।
- बच्चों को अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी मास्टर बनायें: हरीश गुप्ता
- हिन्दी भाषा को उसका गरिमामय स्थान प्रदान करना आज की आवश्यकता - प्रो स्वाईन।